संपादकीय

डेल की मुसीबत का पैगाम

कभी दुनिया की सबसे बड़ी पर्सनल कंप्यूटर (पीसी) निर्माता कंपनी रही डेल की मुसीबत में दुनियाभर के उद्यमियों के लिए पैगाम छिपा है। पैगाम यह कि तकनीक की तेजी से बदलती दुनिया के बीच कोई उत्पाद या सेवा दीर्घकालिक नहीं है। जो आविष्कारों के साथ आगे बढ़ेगा, वही बाजार में टिकेगा। 1984 में बनी डेल कंपनी दुनियाभर में पीसी के प्रसार के साथ अपने उत्कर्ष पर पहुंची, मगर टैबलेट और स्मार्टफोन का युग आते ही संकट में फंस गई। नतीजतन, डेल अब पब्लिक से प्राइवेट कंपनी हो जाएगी। अगले डेढ़ महीने में वह शेयरधारकों से अपने 24 अरब डॉलर के शेयर वापस खरीद लेगी। कभी इस अमेरिकी कंपनी का बाजार मूल्य 100 अरब डॉलर से ज्यादा माना जाता था, लेकिन नए कंप्यूटर उपकरणों के दौर में इसका भविष्य अनिश्चित हो गया। गार्टनर नामक मार्केट रिसर्च ग्रुप के मुताबिक पिछले वर्ष पीसी की बिक्री में साढ़े तीन प्रतिशत की गिरावट आई। अनुमान है कि इस वर्ष लैपटॉप भी बिक्री में टैबलेट से पिछड़ जाएंगे। नतीजतन न सिर्फ डेल, बल्कि पीसी निर्माता कंपनी हेवलेट पैकार्ड (एचपी), पीसी चिप निर्माता इंटेल और पीसी सॉफ्टवेयर निर्माता कंपनी माइक्रोसॉफ्ट का कारोबार भी कमजोर पड़ा है। नए दौर की चुनौतियों से निपटने के लिए डेल और एचपी दोनों ने सॉफ्टवेयर और तकनीक परामर्श के क्षेत्र में कदम रखे हैं। उधर पीसी और लैपटॉप के लिए विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम बनाने वाली कंपनी माइक्रोसॉफ्ट छोटे कंप्यूटर उपकरणों के लिए ऑपरेटिंग सिस्टम बनाने में जुटी है। बहरहाल, चूंकि डेल के मुख्य कारोबार में सेंध लगने के कारण उसका मुनाफा घटा तो बाजार में उसके शेयरों के भाव में गिरावट आने लगी। इन परिस्थितियों में डेल के कर्ता-धर्ता इस नतीजे पर पहुंचे कि कंपनी को संभालने के लिए इसके कारोबारी ढांचे में व्यापक परिवर्तन करना होगा। तब उन्होंने कंपनी को वापस प्राइवेट दायरे में ले जाने का फैसला किया, ताकि शेयरधारकों और विनियामकों की बिना निगरानी और दखल के वे व्यापार की नई रणनीति बना सकें। लेकिन यह काम आसान नहीं होगा, क्योंकि टैबलेट और स्मार्टफोन अब लोगों की आदत बनते जा रहे हैं तथा इस बाजार में दूसरी कंपनियों ने अपने पांव जमा लिए हैं। यानी डेल के लिए आगे रास्ता कठिन है।

बात पते की

दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है, जो असाधारण सुख की आस में संतोष को ताक पर रख देते हैं।

डग लार्सन

समाज और मीडिया

पहले न्यूज स्टोरी पर रोशनी डालना मकसद होता था, मगर अब स्टूडियो में गर्मी 'पैदा' करना मुख्य एजेंडा हो गया है।

बदलते दौर के बीच मीडिया की फिसलन

राजदीप सरदेसाई
आईबीएन 18 नेटवर्क के एडिटर-इन-चीफ
rajdeep.sardesai@network18online.com

अब खबर की जगह अफवाहों ने, समझ की जगह सनसनी ने और इतिहास की जगह ड्रामेबाजी ने ले ली है। माध्यम वही है, मगर संदेश काफी हद तक बदल गया है।

अमेरिकी पॉप आर्ट आइकॉन एंडी वारहोल ने शायद सही कहा था कि यहां हर कोई अपनी 15 मिनट की शोहरत तलाश रहा है। अब यह समय 15 सेकंड की साउंडबाइट तक सिमट गया है। वर्ष 1998 में शिवसेना की उत्तर भारत इकाई के स्वयंभू नेता जय भगवान गोयल ने हमें 'आमंत्रित' करते हुए कहा कि 'फायर' फिल्म दिखाने वाले सिनेमाघर पर उनके प्रस्तावित हमले को कवर करने के लिए हम अपनी कैमरा टीम भेज दें। हमने पुलिस को इत्तला दी, मगर फिल्मों की तरह रियल लाइफ में भी खाकी वर्दीधारी थोड़ी देर से पहुंचे। थिएटर पर हल्ला बोलते हुए शो रुकवा दिया गया और गोयल की गिरफ्तारी पहले पेज की व प्राइम टाइम खबर बन गई। कुछ दिन बाद जमानत पर रिहा गोयल हमारे ऑफिस में मिठाई का डिब्बा लेकर हाजिर था। वह मुस्कराते हुए बोला- 'आपने घटना को बहुत अच्छे से कवर किया। धन्यवाद!'

मैं उसके बाद उससे कभी नहीं मिला। मगर कुछ घंटों के लिए वह एक न्यूजमेकर था। गोयल भले ही आज इतिहास हो, लेकिन यहां ऐसे कई लोग हैं जो उसकी विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। पिछले कुछ हफ्तों में हमने तमिलनाडु में मुस्लिम कार्यकर्ताओं, राजस्थान में दलित समूहों, घाटी में कश्मीरी मौलवियों, राष्ट्रीय राजधानी में विहिप के मध्यम स्तर के कार्यकर्ताओं को मीडिया की धूप में अपने लम्हों का आनंद उठाते हुए देखा। इनमें से ज्यादातर अनिर्वाचित और तथाकथित हाशिये पर पड़े तत्व हैं, जिनकी सीमित न्यूज वैल्यू है, लेकिन शोरशराबा और हंगामाई वैल्यू काफी है।

सांस्कृतिक असहिष्णुता की ढलान अब फिसलन भरी हो गई है। किसी साहित्य उत्सव में हुई बौद्धिक परिचर्चा शीघ्र ही देश के एक प्रतिष्ठित समाजशास्त्री की गिरफ्तारी की मांग तक पहुंच सकती है; तमिलनाडु में किसी उग्र प्रदर्शनकारी समूह का इस्तेमाल मुख्यमंत्री द्वारा फिल्म पर प्रतिबंध लगाने के लिए किया जा सकता है; घाटी में किसी मुफ्ती का फतवा एक म्यूजिक बैंड की आवाज बंद कर सकता है; कुछ लोगों का होहल्ला किसी पेंटिंग प्रदर्शनी को रुकवा सकता है।

हां, इसके लिए कानून लागू कराने वाली मशीनरी को अपनी प्रमुख भूमिका न निभाने का दोषी ठहराया जा सकता है। लेकिन हम मीडियावालों का क्या? 1998 में केवल एक 24×7 न्यूज नेटवर्क था। आज 300 से ज्यादा न्यूज चैनल हैं, जो खबरों के लिए झपट रहे हैं। खबर जितनी हंगामाखेज हो, उतनी अच्छी है। जहां पहले न्यूज स्टोरी पर रोशनी डालना मकसद होता था, वहीं अब स्टूडियो में गर्मी 'पैदा' करना मुख्य एजेंडा हो गया है। अब खबर की जगह अफवाहों ने, समझ की जगह सनसनी ने और इतिहास की जगह ड्रामेबाजी ने ले ली है। माध्यम वही है, मगर संदेश काफी हद तक बदल गया है। इसी का नतीजा है कि अब खबर के प्रसार और दर्शकों द्वारा उसे समझने के तरीके में एक गुणात्मक बदलाव आया है।

हम अपनी जिम्मेदारी समझते हुए पुनः यह तय करें कि इस तरह के सतही उपद्रवी तत्वों को क्या कवरेज देना है। हां, सांस्कृतिक असहिष्णुता बढ़ रही है और जातीय और धार्मिक 'टोलियां' अपनी आवाज सुनाने के प्रति दृढ़ नजर आती हैं। लेकिन लगातार एक्सपोजर देते हुए कहीं हमने उन्हें प्राइम टाइम में 'वैधता' तो नहीं दे दी? कश्मीर के महिला

रॉक बैंड से जुड़े दुर्भाग्यपूर्ण प्रकरण में क्या हमने उदार और तर्कसंगत आवाजों को तलाशने का पर्याप्त प्रयास किया या फिर हमें हरेक कश्मीरी को धार्मिक अतिवाद के ब्रश से रंगना मुफीद लगता है?

हां, चौबीसों घंटे का न्यूज टीवी एक 'नीतिभ्रष्ट' माध्यम है, जिससे आप हमेशा पारंपरिक न्यूज वैल्यू सिस्टम के अनुरूप चलने की उम्मीद नहीं कर सकते। टेलीविजन में 'लोकतंत्रीकरण' की गुंजाइश है, जो विभिन्न तरह की आवाजों को सुने जाने की इजाजत देता है। लेकिन हमें एक सवाल खुद से पूछना चाहिए कि क्या हमने जटिल बहसों को स्याह व उजले पक्ष तक सीमित करने की अपनी चाह में विविधतापूर्ण राय तलाशने को तिलांजलि दे दी है? क्या हमारे पास बड़े अहम मसलों की स्याह दरारों को खोजने का हुनर व क्षमता है या हम अपने आसपास के कोलाहल के हिसाब से चलते हैं, जो हर न्यूज इवेंट को एक कंट्रोवर्सी (जो अक्सर अवास्तविक होती है) में बदल देता है?

आलोचक इसके लिए टीआरपी को दोष दे सकते हैं, जिसकी वजह से स्तर गिर रहा है। हां, साप्ताहिक टीआरपी कई बार पत्रकारिता को टैब्लॉयड जैसे बॉक्स ऑफिस तक सीमित कर देती है, मगर कंटेंट के ज्यादा उन्नत मापन से क्या वास्तव में वह तरीका बदल जाएगा, जो हम खबर करने के लिए अपनाते हैं? सच तो यह है हमने वह नैतिक दिशासूचक यंत्र खो दिया है जो पत्रकारिता की प्राथमिकताओं को परिभाषित करे। हो सकता है कि हम अपने सेलिब्रिटी स्टेटस में बह जाते हों, हो सकता है कि सिर्फ कैमरे पर होना ही एक ऐसा नशा है जो हमें सही-गलत में भेद करने और अपनी अंतरात्मा को पुनः खोजने से रोकता है।

पत्रकारिता अभी भी एक बेहतर भारत के निर्माण के लिए बदलावकारी घटक हो सकती है। कैमरा अभी भी भ्रष्ट को बेनकाब कर सकता है, शक्तिशाली को विनम्र बना सकता है और अच्छाई का यशगान कर सकता है। लेकिन उसके लिए हमें ऐसी राह अपनानी होगी, जिस पर ज्यादा लोग न जाते हों। जिस पर त्वरित साउंडबाइट्स और दोहराववादी ड्रामा न हो, बल्कि जानकारीपरक राय और असल स्टोरीज हों। जिसमें अतिवादी आवाजों की कर्कशता को और बढ़ाने की बजाय उन्हें अलग-थलग करने का सच्चा प्रयास हो।

पुनश्च- शायद जय भगवान गोयल गलत दौर में जन्मा था। यदि वह आज यहां कहीं होता, तो प्राइम टाइम टीवी पर एक स्थायी तत्व होता। ज्ञान की शक्ति की जगह अब दुखद ढंग से सर्कस-जैसे कर्कश शोरशराबे ने ले ली है।

जीने की राह

परमात्मा से जोड़े फकीरी का अंदाज

फकीरी कोई स्टेटस नहीं है, न ही यह कोई पहचान है और न ही जीवनशैली। यह है एक प्रवृत्ति। फकीरी का अंकुर फूटता है स्वभाव की जमीन पर। परमात्मा से जुड़ने के लिए फकीरी का अंदाज एक सेतु की तरह है। दरअसल ऊपरवाला सदैव स्वभाव में जीता है। संसार व्यवहार से चलता है और संसार बनाने वाला स्वभाव से। जब हम स्वभाव पर टिककर जीते हैं तो कई विशेषताओं में से एक दुर्लभ बात हमारे भीतर यह आ जाती है कि हम कोमल और कठोर दोनों जीवनशैली आसानी से जी लेते हैं। भीतर से कोमल होने का अर्थ यह नहीं है कि कायर हो गए और बाहर से कठोर होने का भी यह अर्थ नहीं है कि निष्ठुर हो गए। कोमलता हमें दूसरों का दुख देख पिघला देगी और कठोरता हमें बड़ी से बड़ी चुनौती में आत्मविश्वासी बनाएगी। परमात्मा जब अवतार लेता है तो दुष्टों के प्रति वज्र से भी अधिक कठोर हो जाता है तथा भक्तों के प्रति पुष्प से भी अधिक कोमल बन जाता है। वैसे तो मनुष्य में भीतर और बाहर भेद नहीं होना चाहिए, लेकिन एक भेद स्वीकार्य है। वह है, भीतर की कोमलता तथा बाहर की कठोरता। दूसरों के कष्ट में भीतर से व्यथित होना उसके कष्ट निवारण की प्रेरणा ही देगा। ऐसी कोमलता कमजोरी नहीं बल्कि दया, सहृदयता, करुणा और प्रेम की जननी ही सिद्ध होगी। बाहर से कठोर दिखने पर लोग हमें गंभीर और अबूझ समझेंगे। भले ही लोग हमें मन की बात सबके सामने उजागर न करने वाला मानें, लेकिन हमारा उदार, सहयोगी, परोपकारी आचरण सबको स्वीकार होगा ही।

-पं. विजयशंकर मेहता | panditji@hamarehanuman.com

जीवन दर्शन

गुरु के वचन सुन निर्भीक हुआ राजा

एक राजा था। उसके जीवन में किसी वस्तु की कमी नहीं थी। पड़ोसी राज्यों से भी उसके मैत्रीपूर्ण संबंध थे। इसके बावजूद राजा के मन में सदैव यह भय बना रहता था कि कहीं कोई हमला करके उसे मार न डाले। एक दिन राजा अपने शयनकक्ष में लेटा हुआ इसी बात पर सोच रहा था कि अचानक उसे एक उपाय सूझा। उसने सोचा कि एक ऐसा महल बनवाया जाए, जो चारों ओर से बंद हो। न उसमें खिड़कियां हों, न रोशनदान, न दरवाजे हों। बस, मात्र एक दरवाजा हो, जिससे प्रवेश और निकास हो सके। ऐसे महल पर किसी का हमला होगा भी, तो वह कारगर न होगा। अगले ही दिन से राजा ने इस महल को बनवाना आरंभ कर दिया। कारीगरों ने दो माह में ही महल तैयार कर दिया। एक परिंदा भी उसमें नहीं घुस सकता था। अब राजा के मन का भय भी जाता रहा। उसे विश्वास हो गया कि अब उस पर कोई हमला नहीं कर सकता। एक दिन राजा के गुरु मिलने आए। राजा ने बड़े उत्साह से उन्हें महल दिखाकर इसके बारे में उनकी राय पूछी, तो वे बोले- 'राजन महल अच्छा बनवाया है, किंतु एक भूल कर दी।' राजा ने वह भूल जाननी चाही, तो गुरु बोले- 'आपने इस महल में एक दरवाजा रखा है। उससे दुश्मन तो नहीं आ सकता, किंतु मृत्यु आ गई तो क्या करेंगे?' गुरु के वचन सुन राजा के ज्ञानचक्षु खुल गए। उसने समझ लिया कि बंद महल से वह दुश्मन से तो बच सकता है, किंतु मृत्यु तो फिर भी आ सकती है। अब राजा ने स्वयं को हर प्रकार के भय से मुक्त कर निर्भीक रहना सीख लिया। जो जन्मा है, उसकी मृत्यु भी निश्चित है। अतः मृत्यु से डरने के स्थान पर जब तक जीवन है, उसे कर्मशील रहते हुए पूर्ण साहस व आनंद के साथ जीना चाहिए।

world'sbest@bhaskar

रिपोर्ट

इथियोपिया की जमीन पर भारतीय नए विवादों में

अमेरिका के ऑकलैंड इंस्टीट्यूट ने रिसर्च में पाया कि इथियोपिया के हजारों लोग पड़ोसी देशों की ओर पलायन कर गए क्योंकि उनकी अनुमति के बिना ही उनकी जमीन विदेशी निवेशकों को दे दी गई। जमीन हड़पने को लेकर बनी रिपोर्ट पर ऑक्सफेम संस्था का कहना है निवेशक जानबूझकर सस्ती जमीन पाने के लिए कमजोर देशों का रुख कर रहे हैं। दुनिया के 23 कमजोर देशों ने 2000 से 2011 के बीच करीब 500 ऐसे सौदे किए। एक नई रिपोर्ट के अनुसार, इथियोपिया ने छह लाख हेक्टेयर कृषि भूमि भारतीय कंपनियों को दी। विरोध करने वाले पत्रकारों और राजनीतिक विरोधियों के साथ मारपीट, नजरबंदी, दमन आदि की कार्रवाई की गई। अमेरिका स्थित ऑकलैंड इंस्टीट्यूट का कहना है कि आने वाले समय में वहां स्थिति और भी खराब हो सकती है। कारण, इन कंपनियों ने वहां काम करना शुरू कर दिया है और सरकार उन्हीं क्षेत्रों में कम से कम 15 फीसदी जमीन का अधिग्रहण और करना चाहती है। हाल ही में एक इथियोपियन दल भारतीय निवेशकों और संस्थानों से अपील करने के लिए भारत आया था कि वे वहां जमीन न खरीदें। इसके साथ ही वहां इथियोपियाई अधिकारियों द्वारा किए जा रहे मानवाधिकार उल्लंघनों को रोकने में सक्रिय भूमिका निभाएं। ऑकलैंड इंस्टीट्यूट की निदेशिका अनुराधा मित्तल का कहना है कि भारत सरकार और भारतीय कंपनियां खुद को इथियोपियाई सरकार के पीछे नहीं छुपा सकती हैं। • guardian.co.uk

फोटोग्राफी

अमेरिका में पोर्टर इंडियाना बीच से लिए गए इस फोटो में दूर शिकागो की स्काईलाइन तक दिखाई दे रही है। पोर्टर इंडियाना से शिकागो के बीच की दूरी सड़क मार्ग से 80 किमी और समुद्र मार्ग से 51 किमी है। फोटोग्राफर टॉम एडम्स ने इसके लिए कैनन 60डी कैमरे और टेलीफोटो लेंस का इस्तेमाल किया है। डूबते सूरज की रोशनी से फोटो में रिचनेस बढ़ गई है। • twistedsifter.com

ड्रीम कम ट्रू

बच्चे ने बनाई डिजाइन बीएमडब्ल्यू ने बना दी कार

बीएमडब्ल्यू उन कंपनियों में से है जो अपनी शानदार लग्ज़री कारों के लिए जानी जाती हैं। उसने ई30, 507 से लेकर छोटी इसेटा जैसी आइकनिक कारें बनाई। मगर, अब उन्होंने एक बच्चे के सपनों की कार को असल रूप दे दिया है। चार साल के ऐली ने एक कार का डिजाइन ड्रॉ किया। उस कार के 19 इंजन और 42 पहिए बनाए। कार में विशाल ट्रंक बनाया, जिसमें खिलौने भरे जा सकें। उसने ड्राइविंग के लिए तीन पोजीशन बनाईं। ऐसी कार जो एक बच्चा ही अपने सपनों में सोच सकता है। बच्चे ने ड्राइंग को अपने अंकल की मदद से टंबलर पर पोस्ट करते हुए लिखा, इस कार को बीएमडब्ल्यू ही होना चाहिए। बच्चे की इस डिजाइन को देखते हुए बीएमडब्ल्यू ने बना दी अपनी कंसेप्ट कार। नाम दिया बीएमडब्ल्यू 421ऐली। अब तक की सबसे बड़ी बीएमडब्ल्यू डिजाइन। हालांकि, बच्चे ने कार में पोर्श के इंजन बनाए हैं। यह पता नहीं कि क्या कंपनी भी इसमें वही इंजन लगाएगी। • jalopnik.com

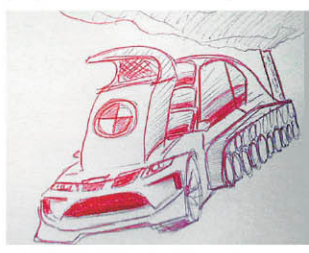

बच्चे ने बनाई थी कार की यह डिजाइन।

डिजाइन

अंगूठी में छिपे हैं टूल

जॉर्जिया स्थित एक शॉप ने पुरुषों के लिए टाइटेनियम की अंगूठी बनाई है। देखने में तो यह एकदम आम है, लेकिन इसमें टाइटेनियम के ही बने कई उपयोगी टूल जैसे कंघी, चाकू, ओपनर, आरी आदि लगे हैं। ये औजार अंगूठी के अंदर छिपे रहते हैं, जिन्हें जरूरत के अनुसार बाहर निकाला जा सकता है। इसकी कीमत करीब 21 हजार रुपए है। बूनेरिंग शॉप ने अपनी पोस्ट में लिखा है कि यह अंगूठी कोई खिलौना नहीं है। कंपनी की वेबसाइट के अनुसार रिंग बनाने वाले जॉर्जिया के रहने वाले हैं। यह रिंग इंटरनेट पर काफी सर्च की जा रही है।

• inquisitr.com

डिवाइस

अब प्रिंट कीजिए अपने एसएमएस

ई-मेल और टेक्स्ट मैसेज लगातार आने वाले नए मैसेज के या तो नीचे दब जाते हैं या फिर स्पेस की कमी के कारण उन्हें डिलीट करना पड़ता है। आप अपने किसी प्रिय व्यक्ति द्वारा भेजे गए संदेशों को नहीं सहेज पाते हैं। कई बार फोन बदलने के वक्त भी मैसेज का बैकअप लेना मुश्किल होता है। मगर, ब्लैकबॉक्स डिवाइस की मदद से मोबाइल के मैसेज हों या ई-मेल आप इसका रिअल टाइम में प्रिंट ले सकेंगे। इसके लिए बस डिवाइस को कॉर्ड से कनेक्ट करना है। मोबाइल, लैपटॉप आदि से सीधे जुड़ जाने वाली यह एक पोर्टेबल डिवाइस है, जिसे प्रिंट निकालने के लिए कहीं भी आसानी से ले जाया जा सकता है। इसे न्यूयॉर्क में रहने वाले अमेरिकी डिजाइनर जो डोसेट ने बनाया है। मैसेज को किसी दूसरे व्यक्ति के साथ शेयर करने के लिए इससे दूसरी कॉपी भी निकाली जा सकती है।

• getaddictedto.com

प्रोजेक्ट

2016 तक इंग्लैंड के हर डॉग को लगेगी माइक्रोचिप

अप्रैल 2016 तक इंग्लैंड के हर डॉग में माइक्रोचिप लगा दी जाएगी। यह एक सरकारी योजना का हिस्सा है ताकि कुत्तों को खोने से बचाया जा सके। साथ ही इनके मालिक भी इन्हें लेकर सजग रहें। ब्रिटेन में हर साल करीब एक लाख 10 हजार कुत्ते खो जाते हैं। आधे से अधिक बार इनके मालिकों की पहचान नहीं हो पाती है। अब सरकार ने इनकी लोकेशन और मालिक की पहचान करने के लिए यह तरीका निकाला है। एक छोटे से चावल के टुकड़े के आकार की चिप कुत्ते के कंधे में फिट कर दी जाएगी। इससे खोए हुए कुत्तों को ढूंढ़ना आसान हो जाएगा। ब्रिटेन में करीब 60 फीसदी यानी 80 लाख कुत्तों को पहले ही माइक्रोचिप लगे हैं। मगर, अप्रैल 2016 से कुत्तों को चिप लगवाना अनिवार्य हो जाएगा। ब्रिटेन में पालतू कुत्ता किसी को काट ले तो उसके मालिक को

जुर्माना देना होता है। ऐसे में कई बार कुत्ते के मालिक अपने कुत्ते को पहचानने से इंकार कर देते हैं। अब डॉग पर चिप लगने से वे ऐसा नहीं कर सकेंगे। अब किसी भी कुत्ते को बेचने या खरीदने से पहले उसके मालिक को सारी डिटेल रजिस्टर करवाना होगी। इसका पालन न करने वाले पर 41 हजार रुपए का जुर्माना लगाया जाएगा। माइक्रोचिपिंग का खर्च करीब दो हजार रुपए तक आ सकता है। पर्यावरण सचिव ओवेन पेटरसन का कहना है कि इस देश में लाखों कुत्ते सिर्फ इसलिए सड़कों पर आवारा घूम रहे हैं क्योंकि उनके मालिक द्वारा उन्हें पहचाना नहीं जा सका। यह शर्मनाक है। पेटरसन ने खतरनाक कुत्तों को नियंत्रित करने के लिए नई पुलिस की घोषणा भी की है। यह कदम लोगों पर इनके द्वारा किए जाने वाले हमले रोकने के लिए उठाया गया है। 2005 से यहां छह वयस्क और आठ बच्चों की मौत कुत्तों के काटने से हुई है। पिछले एक साल में ही तीन हजार डाक कर्मचारियों पर कुत्तों ने हमला किया था। इनमें से 70 फीसदी मामले प्राइवेट प्रॉपर्टी पर हुए थे। • guardian.co.uk